माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेन्डरी परीक्षा

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12.03.09

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C,या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2001	A

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर चस्पा करें

केन्द्र क्रमांक की सील 77...

सरल क्रमांक K

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	7	7	1	6	2	0	8

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

दो	नौ	सात	सात	एक	छः	दो	शून्य	आठ

SECONDARY EDUCATION, मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र.

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में X अंकों में X

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 10 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) [signature]

नाम [signature] पद AT

पता / संस्था NSCS

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पु...
चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन ...
पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक ...

हस्ताक्षर (परीक्षक) [signature] हस्ताक्षर (उपमुख्...

परीक्षक क्रमांक 9350158 दिनांक.......... दिनांक..........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोडें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3 | योग पूर्व पृष्ठ | + | पृष्ठ 3 के अंक | = | कुल अंक

मध्यप्रदेश

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1)

(i) अक्रूर

(ii) केशवदास

(iii) मीराबाई

(iv) सन् 1940

(v) भवानी प्रसाद मिश्र

(2)

(i) अथाप्रियंवदा

(ii) कायरता

(iii) कबीर

(iv) छायावाद

(v) प्रगतिवादी

(3)

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

BSE MP

B S E M P

(4)

(i) काव्य में सर्वाधिक छन्दों का प्रयोग किया है। — (ख) केशव ने

(ii) काव्य में भाव विह्वलता कूट-कूट कर भरी है। — (क) मीरा ने

(iii) राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने वाले कवि हैं। — (ङ) गोपाल सिंह नेपाली

(iv) रीतिमुक्त काव्य धारा के कवि हैं। — (ग) घनानन्द

(v) 'ध्रुव प्रसंग' नामक कविता के रचयिता हैं। — (घ) जगन्नाथ दास रत्नाकर

(5)

(i) सूरदास

(ii) कृत्वाचक्कवाक्य साधारण वाक्य

(iii) वैद्य

(iv) तात्या टोपे

(v) वाक

योग

BSEMP

प्र० (6) कबीरदासजी ने अपनी रचना "अमृतवाणी" के अन्तर्गत सामाजिक समरसता एवं सामाजिक बुराइयों पर प्रकाश डाला है। कबीर दास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानव एवं उसके सत्कर्मों का संदेश जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव को सद्गुणों को अंगीकार करने का आह्वान किया है। ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रसिद्ध कवि एवं रचनाकार सरल शब्दों के विषय में कहने से भी चूकते नहीं हैं।

कबीरदास जी ने शब्दों के विषय में वर्णन करते हुए कहा है कि शब्दों का उपयोग मनुष्य को सोच समझकर भलीभाँति करना चाहिए क्योंकि इन शब्दों में भी विचित्र प्रकार के गुण विद्यमान रहते हैं। शब्दों को यदि मिठास के साथ प्रयुक्त किया जाए तो वह औषधि का काम करता है। यदि शब्दों का उपयोग किसी से अच्छे सम्बोधन के लिए हो तो वह सभी को अच्छा लगता है। वहीं यदि किसी को कटाक्ष पूर्ण भले-बुरे शब्द कहें जाएँ तो वह एक तीर की भाँति वार करते हैं। अर्थात् इस सम्पूर्ण वर्णन से यही आशय निकलता है कि व्यक्ति को सभी से मीठी वाणी में बोलना चाहिए। मीठी वाणी बोलकर मनुष्य सभी को अपना बना लेता है। वहीं यदि वह कठोर वचन का प्रयोग करता है तो वह सभी को दुश्मन बना लेता है।

इसके साथ ही कबीर दास जी ने शब्दों को सम्हाल कर प्रयोग करने के लिए सचेत किया है क्योंकि यदि किसी की जिह्वा उसके वश में है तो सारा जहान उसके वश में है। इस प्रकार कबीरदास जी ने शब्दों के महत्व की व्याख्या की है।

य

प्र० (9) हिन्दी में नाटक सम्राट "जयशंकर प्रसाद" जी को कहा गया है। छायावादी कवि होने के साथ-साथ उन्होंने नाटक रचना में भी अपनी रुचि दर्शायी है। विभिन्न शैली एवं भाषा का प्रयोग कर नाटक विधा को परिष्कृत किया है। नाटक में भावों एवं विचारों का समावेश भी किया है। नाट्य विधा का सर्वश्रेष्ठ विकास काल प्रसाद युग को माना गया है। अर्थात् नाटक को चरम सीमा तक लाने का श्रेय जयशंकर प्रसाद को ही जाता है। जयशंकर प्रसाद के समय नाटक को अभूतपूर्व सिद्धि प्राप्त हुई है।

जयशंकर प्रसाद जी के दो नाटकों के नाम -

(1) स्कन्दगुप्त

(2) चन्द्रगुप्त

BSEMP

प्र०(12) छप्पय छन्द

छप्पय छन्द की परिभाषा:- छप्पय छन्द एक विषम मात्रिक छन्द है। इसमें छः चरण होते हैं। प्रथम चार चरण रोला छन्द के एवं अन्तिम दो चरण उल्लाला छन्द के होते हैं।

रोला छन्द के प्रत्येक चरण में 11-13 की यति पर 24 मात्राएँ एवं उल्लाला छन्द के प्रत्येक चरण में 15-13 की यति पर 28 मात्राएँ होती हैं। अर्थात् कहा जा सकता है:-

छप्पय —
- → रोला (प्रति चरण 24 मात्राएँ)
- → उल्लाला (प्रति चरण 28 मात्राएँ)

अंक

उदाहरण :- छप्पय छन्द का उदाहरण निम्न लिखित है :-

जहाँ स्वतन्त्र विचार न बदले मन में मुख में,
जहाँ न बाधक बने सबल निबलों के सुख में,
जहाँ सभी को समान निजोन्नति का अवसर हो
शान्ति दायिनी निशा, हर्ष सूचक वासर हो
सब भाँति सुशोभित हो जहाँ समता के सुखकर नियम
बस उसी स्वशासित देश में जागे हे जगदीश हम।।

B प्र(13)
S (अ) (क) जो विद्यार्थी अच्छे होते हैं, वे परिश्रमी होते हैं।

E (ख) वह दरिद्र है और वह ईमानदार भी है।

M

P (ब) भाव पल्लवन - " धर्म पार्थक्य का नहीं एकता का द्योतक है।"

धर्म कभी किसी को बाँटता नहीं है वह तो सभी मानव जाति को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य करता है। मानव ने धर्म के अनुसार स्वयं को हिस्सों में बाँट लिया है। एक ही स्थान में रहने वाले ब्रह्माण्ड में असंख्य मानव ही खण्डित हो गए। वे अपने-अपने धर्म की बात मानते हैं, उसकी बात को अपने जीवन में उतारते हैं एवं उसका अनुसरण भी करते हैं। परन्तु यह विभाजन के मद में चूर मानव यह कैसे भूल जाते हैं कि धर्म तो एक ही है। धर्म की कोई जाति नहीं होती है। धर्म ने कभी किसी को खण्डित या विभाजित होने की सीख नहीं देता है। वह तो विभिन्न धर्म वाले मानवों को एकता के सूत्र में पिरोता है, फिर यह मानव स्वयं ही इस बात को क्यों नकारता है।

पृष्ठ अंकों का योग

धर्म का कोई रूप नहीं है। वह सभी के लिए एक सद्भाव है। मानव को संगठित करने का मार्ग है। मानव को उसकी मानवता ध्यान कराने का साधन है।

अतः निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि धर्म पार्थक्य का नहीं एकता का द्योतक है।

प्र० (8) छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ:-

हिन्दी काव्य के साहित्य में छायावाद एक महत्वपूर्ण युग रहा है। छायावाद ने काव्य की दिशा को मोड़ दिया एवं नवीन युग का संचार किया। छायावाद की प्रमुख चार विशेषताओं को निम्न प्रकार समझा जा सकता है।

(1) व्यक्तिवाद की प्रधानता:- छायावाद में व्यक्तिवाद की प्रधानता रही है। छायावादी कवियों ने स्वयं के दुःख एवं सुख को हर्ष एवं शोक के रूप में अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है।

उदाहरण स्वरूप:-

निराला जी के शब्दों में,

"दुःख ही जीवन कथा रही क्या कहूँ,
जो अब तक नहीं कही।
मैं नीर भरी दुःख की बदली।"

(2) प्रकृति का मनोहारी चित्रण:- प्रकृति का मानवीकरण द्वारा सौंदर्य वर्णन छायावाद की प्रमुख विशेषता रही है। प्रकृति के अचिंतन रूप में कवियों ने चेतना आरोपित की है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उदाहरण:- जयशंकर प्रसाद के शब्दों में,

"बीती विभावरी जाग री
अम्बर-पनघट में डुबो रही
तारे- घट ऊषा नागरी।"

(3) प्रेम और सौन्दर्य वर्णन:- छायावादी कवियों ने प्रकृति के सौन्दर्य सौन्दर्य को नारी के सौन्दर्य के तुल्य मानकर काव्य रचना की है।

उदाहरण:- जयशंकर प्रसाद के शब्दों में,

"नीला परिधान बीच सुकुमार
खुला था मृदुल अधखुला अंग।"

(4) अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम:- छायावादी कवियों ने ईश्वर की आराधना अपने काव्यों के माध्यम से की है। ईश्वर के प्रति कौतूहल दर्शाया गया है।

उदाहरण:- प्रसाद जी के शब्दों में -

"किसकी सत्ता छुप रहकर
स्वीकार करते सब यही?
हे! अनन्त रमणीय तुम कौन?"

इस प्रकार छायावाद हिन्दी काव्य साहित्य का महत्व पूर्ण युग है।

B S E M P

(10) + =

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 10 के अंक कुल अंक

प्र०(7) जयशंकरप्रसाद द्वारा रचित काव्य शीर्षक "गीत" के अन्तर्गत रात्रि के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

प्रसाद जी कहते हैं कि एक सखी अब दूसरी सोई हुई सखी को जगाते हुए कह रही है कि हे! सखी, अब तू जाग जा। क्योंकि प्रातः काल होने लगा है। इस प्रातःकालीन बेला का वर्णन करते हुए प्रसाद जी ने कहा है कि विभावरी अर्थात् रात्रि के बीत जाने पर कथानागरी रूपी स्त्री अम्बर रूपी पनघट में तारे रूपी घड़े को डुबो रही है अर्थात् तारे डूबने लगे हैं। आशय यह निकलता है कि रात्रि अब जाने लगी है। प्रातः काल होने को है। अतः सखी अपनी निद्रामग्न सखी को जगा रही है।

प्रातः काल आने से नवीन सुबह का संचार होने लगा है। घड़े को डुबोने पर जो कुल-कुल की ध्वनि आ रही है ऐसा प्रतीत होता है जैसे भोर के आगमन पर पक्षी डाल पर बैठ चहचहा रहे हों। ओस की बूंदें घास पर गिरने से नवीनता आ गई है। इस प्रकार नवीन सुबह का आगमन हो रहा है।

प्रकृति में रोमांच की सी अनुपम छटा दिखाई दे रही है। पक्षियों की कलरव ध्वनि एवं नवीन कोपलों का सौन्दर्य हृदय को पुलकित कर रहा है। परन्तु सखी तो अभी अलसाई हुई है।

प्र०(10) "तिमिरगेह में किरण आचरण" के अन्तर्गत लेखक ने बताया है कि मेरे गाँव में अब वह मोहकता नहीं रही जो पूर्व में थी। यह गाँव तो अब पूरी तरह बदल गया है। निम्नलिखित तीन चीजें हैं जो गाँव से गायब हो रही हैं :-

(1) हलों के दिपधों की टिटकारें
(2) तालाब में भरे बधान
(3) टिमटिमाते दिए की रोशनी

लेखक का कहना है कि अब गाँव पूरी तरह उजाड़ बन चुका है न तो यहाँ कोमलता एवं न ही सरसता है।

पहले यहाँ गाँव में हलों का उपयोग किया जाता था, उसका स्थान धरती एवं खेत फटाते ट्रैक्टर ने लिया है जो धरती की छाती चीर रहे हैं। अब गाँव में तालाब दिखाई ही नहीं दे। अब तो ट्यूबवैल लगा दिया गया है जो धरती के हृदय से जल को चूस रहा है। बिजली से पूरा गाँव चौंधिया रहा है। दिए की रोशनी उसके सामने फीकी पड़ गई है। गाँव-गाँव में बिजली के बल्ब का उपयोग हो रहा है। इस प्रकार पूरा गाँव परिवर्तित हो गया है।

प्र०41) उत्तराखण्ड में प्राकृतिक सौंदर्य देखने योग्य हैं। यहाँ चार धाम स्थित हैं जो उत्तराखण्ड के चारों ओर स्थित हैं। प्रमुख धामों के नाम इस प्रकार हैं:—

B
S
E
M
P

(1) यमुनोत्तरी – यमुना नदी
(2) गंगोत्तरी – गंगा नदी
(3) केदारनाथ – मंदाकिनी नदी
(4) बद्रीनाथ – अलकनन्दा नदी

चारों धाम चार पवित्र नदियों के किनारे बसे हुए हैं। यमुनोत्तरी यमुना नदी के किनारे-किनारे, गंगोत्तरी गंगा नदी के किनारे-किनारे, केदारनाथ मंदाकिनी के किनारे किनारे एवं बद्रीनाथ अलकनंदा के किनारे-किनारे बसा हुआ है।

यमुना नदी का नीर श्याम रंग का, गंगा नदी का नीर श्वेत रंग का, मंदाकिनी नदी का नीर हरा रंग का एवं अलकनन्दा का नीर नीले रंग का है। इस प्रकार उत्तराखण्ड एक स्वर्ग का रूप दिखाई देता है। उत्तराखण्ड की यात्रा करना एक पुण्य का कार्य है। उत्तराखण्ड में देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग एवं प्रयागराज अत्यंत प्रसिद्ध स्थान हैं। रुद्रप्रयाग में मंदाकिनी व अलकनंदा का जल मिलता है। देवप्रयाग में अलकनन्दा व यमुना का जल मिलता है। प्रयागराज में यमुना व गंगा का जल मिलकर गंगा के रूप में विख्यात है। गंगा का श्वेत जल पवित्र है। उत्तराखण्ड का सौन्दर्य स्विट्जरलैण्ड एवं कश्मीर से भी अत्यन्त मनोरम एवं प्राकृतिक है।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

प्र० (14)

डॉ० रघुवीर सिंह

(क) दो रचनाएँ :- (1) शेष स्मृतियाँ
(2) बिखरे फूल

(ख) भाषा शैली :- डॉ० रघुवीर सिंह जी की भाषा पूर्णतः परिमार्जित, शुद्ध, सरल, सुस्पष्ट एवं बोधगम्य है। भाषा में कुछ अन्य भाषाओं जैसे - उर्दू, फारसी आदि का स्थान-स्थान पर प्रयोग किया गया है। भाषा में प्रवाह एवं प्रभावउत्पादकता लाने के संदर्भ में शब्दों का चयन विशेष रूप से किया गया है। आपने भाषा में विभिन्न संकेतों का प्रयोग कर भाषा के क्षेत्र में अपना परिचय दिया है। भाषा जन सामान्य को पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है।

भाषा के साथ साथ शैली का प्रयोग भी रघुवीर सिंह जी ने बड़ी प्रमुखता से किया है। शैली में नवीनता एवं चित्रात्मकता है। शैली को पूर्णतः प्रभावपूर्ण प्रस्तुत प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया है। शैलियों में मुख्य रूप से आलंकारिक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया गया। शैली के क्षेत्र में आप ख्याति प्राप्त हैं।

(ग) साहित्य में स्थान :- डॉ० रघुवीर सिंह जी हिन्दी साहित्य जगत में अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। आपने हिन्दी साहित्य में अपना सम्पूर्ण जीवन लगाया है। आप प्रसिद्ध गद्यकाव्य लेखक हैं अतः भावों को प्रधानता देते हुए रचनाएँ की हैं। आपके इस साहित्य योगदान के लिए आप सदैव चिरस्मरणीय रहेंगे।

BSEMP

प्र०(19)

जयशंकर प्रसाद

(क) दो रचनाएँ :- (1) एक घूँट
(2) आँसू

(ख) भावपक्ष-कलापक्ष :- जयशंकर प्रसाद जी का भावपक्ष अत्यन्त उन्नत है। उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण करते हुए रचनाएँ की हैं। प्रकृति चित्रण में वे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। एक उदाहरण देखिए-

"बीती विभावरी जाग री
अम्बर- पनघट में डुबो रही
तारा घट ऊषा नागरी॥"

जयशंकर प्रसाद छायावादी कवि हैं। अतः उन्होंने प्रकृति के चित्र के साथ प्रेम और सौंदर्य का भी वर्णन किया है। अज्ञात सत्ता के प्रति उनका प्रेम निम्नलिखित पंक्तियों द्वारा झलकता है:-

"किसकी सत्ता चुप रहकर,
स्वीकारते सब रहो?
हे! अनन्त रमणीय तुम कौन?"

कलापक्ष को भी जयशंकर प्रसाद ने पूर्णतः संवारा है। विभिन्न छन्द, अलंकार उत्प्रेक्षा, उपमा, अनुप्रास आदि अलंकार प्रयुक्त किए हैं। प्रकृति के लिए शृंगार रस का वर्णन किया है। स्थान-स्थान पर अलंकार योजना से काव्य प्रतिभा उभरी है।

(ग) साहित्य में स्थान :- जयशंकर प्रसाद छायावाद के आधार स्तम्भ एवं युग प्रवर्तक कवि हैं। आपने छायावाद को परिष्कृत किया है। आपने काव्य के साथ-साथ नाटक के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित किया है। आपको "नाट्य सम्राट" कहा जाता है।" आपके इस योगदान एवं हिन्दी कविता को देन के लिए सदैव स्मृति पटल पर अंकित किया जाएगा।

पृष्ठ के अंकों का योग

मध्यप्रदेश

प्र०(16)

गद्यांश

गद्यांश :- मानव के लिए चिर ------------------ सकुचा गए

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी पाठ्य पुस्तक स्वाति के शीर्षक "यशोधरा" से उद्धृत है, जिसके रचयिता डॉ० रघुवीर सिंह हैं।

प्रसंग :- डॉ० रघुवीर सिंह ने प्रस्तुत गद्यांश ~~में~~ में ~~गौतम~~ गौतम के द्वारा गृह त्याग का वर्णन किया है।

व्याख्या :- लेखक का कथन है कि गौतम बुद्ध ने मानव के जीवन में सुख की प्राप्ति का अमृत प्राप्त करने के लिए गृह का त्याग कर दिया है। उन्होंने अपने विचारों का मंथन किया एवं चिर वियोग को ही असली सुख जानकर अपने परिवार का त्याग कर निर्जन स्थान में गमन किया है। जब यशोधरा को इस बात का ज्ञात होता है तब वह हताश हो जाती है। जिस प्रकार समुद्र के मंथन से निकले विष को शंकर भगवान ने अमृत समझकर पी लिया एवं नीलकण्ठ कहलाए उसी प्रकार यशोधरा ने भी, गौतम बुद्ध के जीवन मंथन से निकले चिर वियोग रूपी विष को निःसंकोच ग्रहण कर लिया परन्तु वह नीलकण्ठा नहीं हुई अर्थात उसने इस दुख का सामना हँस कर किया जिससे समस्त कैलाशवासी भी आश्चर्यचकित रह गए। इस वियोग को भी यशोधरा ने सहर्ष स्वीकार किया।

विशेष :-

(1) प्रस्तुत गद्यांश में गौतम बुद्ध के वन गमन का वर्णन है।

(2) यशोधरा ने चिर वियोग रूपी विष का पान किया है।

(3) कैलाशवासियों को ~~लज्ज~~ भयभीत करने वाली यशोधरा नीलकण्ठा नहीं हुई।

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

(15)

अंक

मध्यप्रदेश

प्र०(17)

पद्यांश

पद्यांश:- फुर-फुर -- बरसाती

संदर्भ:- प्रस्तुत पद्यांश पाठ्य पुस्तक स्वाति के शीर्षक "मंगल वर्षा" से अवतरित है। इसके रचयिता "भवानी प्रसाद मिश्र जी" हैं।

प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियों में मिश्र जी ने वर्षा ऋतु के आगमन पर होने वाले परिवर्तनों का वर्णन किया है।

व्याख्या:- भवानी प्रसाद मिश्र जी वर्षा ऋतु के आगमन के सन्दर्भ में कहते हैं कि वर्षा की फुहार जब किसी के केशों पर पड़ती हैं तो वे मोती के समान झलकते हैं। वर्षा ऋतु में किसान की पत्नी खेतों के बीच फसलों को निहारती हुई कजरी गीत गा रही है। झरनों की झर-झर ध्वनि मन को हर्षित कर देती है। यह दृश्य देखकर किसानों की स्त्रियाँ यह विचार करती हैं कि अवश्य ही हमने पूर्व जन्म में कोई पुण्य का कार्य किया होगा जो हमें यह दृश्य देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। वर्षा ऋतु में जब कोई स्त्री का पति उसे स्पर्श करता है तो वह आनन्द मयी हो जाती है। अर्थात् कवि कहते हैं कि वर्षा के आगमन पर स्नेह रूपी अंकुर फूटने लगे हैं।

विशेष

(1) प्रस्तुत पद्यांश में वर्षा ऋतु का वर्णन है।

(2) वर्षा आगमन पर गाए जाने वाले लोकगीत कजरी का वर्णन है।

3) प्रकृति रूपी स्त्री, वर्षा से अत्यन्त हर्षित है।

(4) मानवीकरण अलंकार का प्रयोग।

(5) झर-झर .... में पुनरुक्ति प्रकाश एवं अनुप्रास अलंकार हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

(18) अपठित गद्यांश

(क) प्रस्तुत गद्यांश का शीर्षक- "कवि और काव्य प्रतिभा" होना चाहिए।

(ख) भावार्थ:-

काव्य कितना अधिक रोचक एवं आनन्ददायक होना चाहिए यह एक अच्छा कवि ही जान सकता है। कवि के काव्य प्रतिभा को उसकी रचनाओं के द्वारा ही जाना जा सकता है। काव्य में जितना सौन्दर्य एवं प्रभावशीलता होगी, व्यक्ति उसी काव्य को पढ़ने में रुचि दिखाएगा। जिस कवि को साहित्य निर्माण की अच्छी समझ है वही सम्मान का पात्र है।

(ग) जिस कवि में अपने हृदय के भाव को यथार्थ रूप में पाठक या श्रोता के हृदय में पहुँचाने की जितनी क्षमता होती है, उसकी कविता उतनी ही अधिक प्रभाव तथा रसमग्न करने वाली होती है। ऐसे ही कवियों की कविता का सदैव आदर होता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(17)] + [ ] = [

यो पृ

(19)

आवेदन पत्र

सेवा में,

श्रीमान प्राचार्य महोदय,

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,

लखनादौन (म०प्र०)।

विषय; निर्धन छात्रकोष से छात्रवृत्ति हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि मैं नीतीश डेहरिया आपकी शाला में कक्षा-12वीं जीव विज्ञान संकाय का छात्र हूँ। मुझे ज्ञात हुआ है कि इस वर्ष उच्च अंक प्राप्त करने वाले निर्धन छात्रों को निर्धन छात्र कोष से छात्रवृत्ति प्रदाय की जाएगी। इस हेतु मैं यह आवेदन पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मैं आपके विद्यालय का नियमित छात्र हूँ। मैंने कक्षा-11वीं में 80% अंक प्राप्त कर कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त मैं विद्यालय की हॉकी टीम का कप्तान भी रह चुका हूँ। मेरे पिताजी एक निर्धन किसान हैं, जिससे मुझे पढ़ाई के लिए आवश्यक सामग्री प्राप्त नहीं हो पाती है।

अतः आपसे निवेदन है कि मुझे निर्धन छात्र कोष से छात्रवृत्ति प्रदान करने की कृपा करें जी।

उचित विनय सेवा में पेश।

धन्यवाद।

दिनांक:- 12.03.09

स्थान:- लखनादौन

आपका आज्ञाकारी छात्र

नाम - नीतीश डेहरिया

कक्षा- 12वीं (जीव विज्ञान)

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(20)

निबन्ध

(iii) भारतीय समाज में नारी का स्थान

रूपरेखा:-

→ प्रस्तावना

→ भूतकाल में नारी

→ मध्यकाल में नारी

→ आधुनिक काल में नारी

→ उपसंहार

"नारी हो तुम इस समाज की,
विश्वास रजत पग-पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो
इस पवित्र-पावन समतल में।"

प्रस्तावना:- सारी सृष्टि का निर्माण दो जीवों से ही सम्भव है। वे दो जीव धारी हैं। स्त्री एवं पुरुष। स्त्री और पुरुष एक ही गाड़ी के दो पहिए के समान हैं। यदि एक पहिया भी रुका तो जीवन गाड़ी का संचालन असम्भव है।

स्त्री एवं पुरुष एक चक्र है। इस चक्र के बीच इन्हें बाँधने वाला है इनका प्रेम। प्राचीन काल से ही स्त्री एवं पुरुष को एक दूसरे का साथी एवं पूरक बताया जाता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

स्त्री एवं पुरुष दोनों ने ही सृष्टि को रचा है। परन्तु आदिकाल से पुरुष हमेशा से ही नारी को अपने से कम आंकता आया है। इसे अपने पुरुष होने का घमण्ड हो गया है। सदैव देवी, माँ, सहचरी दिखाई देने वाली स्त्री को पुरुष ने अपनी दासी एवं अनुचरी बना लिया है। उस पर अत्याचार करने पर वह अपने को महान बनाता है। यदि नारी ने इस सृष्टि की रचना की है तो फिर वह यह अत्याचार क्यों सहन करे? क्यों वह सदैव कलंकिनी कही जाए? क्यों उसे दहेज लोभी के लिए मृत्यु का ग्रास बनना पड़े? यदि स्त्री ने एक दिन अपनी आवाज उठाई तो सारे संसार में प्रलय आ जाएगा एवं पुरुष को उसके समक्ष झुकना ही पड़ेगा। अतः एक रूप में यदि नारी देवी रूपी ममतामयी है वहीं दूसरी ओर शक्ति की तरह से वार करने वाली भी है।

(२) भूतकाल में नारी:-

प्राचीन काल में नारी को सदैव सम्मान का पात्र माना गया है। उसे पुरुष के समान ही अधिकार प्राप्त थे। प्राचीन काल में अनेक ऐसे उदाहरणों को देखा जा सकता है। जिससे नारी शक्ति का ज्ञान होता है। नारी को सदैव सम्मान का दर्जा दिया गया है। वैदिक काल में नारियों ने ऋग्वेद के वैदिक सूत्रों की रचना की है। श्री राम के समय त्रेतायुग में महारानी कैकयी ने युद्ध भूमि में महाराज दशरथ का साथ देकर उनकी प्राण रक्षा की एवं अपने अदम्य साहस एवं वीरता का परिचय दिया। यही नहीं यदि हम महाभारत युद्ध की बात करें तो द्रौपदी, गांधारी एवं कुन्ती की तरह अनेक आदर्श नारियों के उदाहरण मिलते हैं।

सीता माता आदर्श नारी के रूप में विश्व विख्यात हैं एवं उनकी सहनशीलता एवं पतिव्रत धर्म को आदर दिया जाता है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(9) मध्यकाल में नारी :- प्राचीनकाल की नारियों की तरह इस काल की नारियों को इतना आदर मान नहीं था। यहाँ ~~स्त्रि~~ स्त्रियों की स्वतंत्रता को छीन लिया गया। उसे केवल पुरुष से नीचा दिखाने की कोशिश की जाने लगी। अब उसे शासकों की कामलोलुप दृष्टि से बचाने के लिए घर की चहार दीवारी में रहना पड़ा। इस प्रकार प्राचीन काल की उड़ती हुई चिड़िया अब एक बन्द पिंजरे में कैद पड़ी थी।

इस समय भी कुछ वीर नारियों ने पुरुषों के समान अदम्य साहस का परिचय दिए एवं रण भूमि से लेकर राजदरबार के कार्य को भी सम्हाला। परन्तु वह स्वतंत्रता प्राचीन स्वतन्त्रता से पूर्णतः अलग थी। मध्यकाल से आते-आते नारी की दशा इस कदर दयनीय हो गई कि उसका अस्तित्व ही समझ में नहीं आया। सतीप्रथा, बाल विवाह, स्त्रीशिक्षा का विरोध भी किया जाने लगा। इस प्रकार दयनीय स्थिति को देखकर मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखा है-

"नारी अबला हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"

अन्य कवियों कबीर, रहीम आदि ने नारियों की स्थितियों का कोई वर्णन ही नहीं किया है। अपितु तुलसीदास जी ने उसे गँवार एवं शूद्र बताकर उसे कष्ट का मार्ग बताया है।

गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार,

"~~ढ~~ ढोल, गँवार, पशु, शूद्र, नारी;
ये सब ताड़न के अधिकारी।"

इस प्रकार नारी की अत्यंत दयनीय स्थिति थी।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

(4) आधुनिक काल में नारी :- आधुनिक काल की नारी मध्यकाल की नारी से सशक्त है। आधुनिक काल में नारी को सभी अधिकार प्रदान किए गए हैं। मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल में नारी उत्थान के अनेक कार्य किए गए हैं। दहेज प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह आदि कुप्रथाओं को पूर्णतः समाप्त करने का प्रयास जारी है। कुछ कुप्रथाएँ जड़ से समाप्त हो चुकी हैं। अनेक महान योद्धा एवं समाज सुधारक जैसे - राजा राम मोहन राय एवं दयानन्द सरस्वती ने नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया है। अनेक विद्यालय एवं विश्व विद्यालय खोले गए हैं जो केवल स्त्रियों के लिए हैं।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने अपनी काव्य पंक्ति में कहा है -

" मुक्त करो नारी को मानव,
चिर बन्दिनी, नारी को।। "

आधुनिक समय में अनेक नारियों के उदाहरण दिए जा सकते हैं जो नारी के उच्च स्थान को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए - विजय लक्ष्मी पण्डित, महादेवी वर्मा, इन्दिरा गाँधी, सरोजिनी नायडू एवं लता मंगेशकर जैसी ऐसी प्रतिभाएँ भारतीय समाज में हैं जिन्होंने अपनी सफलता का परिचय देश में नहीं अपितु विदेशों में भी दिया है। इस सब के बावजूद भी आधुनिक नारी पश्चिमी सभ्यता को अपनाकर अपने अस्तित्व को बिगाड़ने पर तुली हुई है।

(5) उपसंहार :- सम्पूर्ण वर्णन के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि यदि नारी को आगे बढ़ने का मौका दिया जाए एवं प्रोत्साहन किया जाए तो वह पुरुष को भी हर क्षेत्र में पीछे छोड़ सकती है। आज उसे अपने पैरों पर खड़ा होने की जरूरत है तब उसे माँ के रूप में पुत्र पर, पत्नी के रूप में पति पर परजीवी के रूप में आश्रित रहने की जरूरत नहीं है।

आज के परिवेश को देखते हुए यदि नारी स्वयं को आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के चंगुल में न फँसाकर स्वयं आदर्श व्यक्तित्व प्रदर्शित करे तो वह दिन दूर नहीं जब हर क्षेत्र में नारी का नाम होगा।

पृष्ठ के अंकों का योग

आज किसी भी पुरुष में वह शक्ति नहीं है जो नारी शक्ति को रोकने का साहस करे। नारी को समाज में एक पूर्ण विकसित अस्तित्व बनाए रखना है। पुरुष के साथ सहचरी बनना है ताकि जीवन रूपी गाड़ी चल सके।

अंत में यही अभिलाषा है कि भारतीय नारी पूर्ण संस्कारित रूप के साथ कर्त्तव्य पालन करते हुए आदर्श प्रस्तुत करे।

"जय हो नारी तेरी विजय हो
तुझमें ही सभी शक्ति,
बस तेरी ही विजय हो।"

SEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग